© 2017 IJSRSET | Volume 3| Issue 1 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

पर्यावरण शिक्षा : आवश्यकता और चुनौतियाँ

RAJEEV KUMAR
M.A (Education) NET

शिक्षक की आधुनिक शिक्षा पद्धति में अनके भूमिकाएं ऐसी हैं जो अलिखित हैं। जैसे– दुर्बल व असहाय वर्ग को आगे बढ़ाना, वजीफा देना और सुविधाएं जुटाने आदि की भूमिका। कभी–कभी नियमों से हटकर भी काम करना होता है, क्योंकि पूरी तरह नियम पालन किया जाए तो हो सकता है जिस बालक को लाभ मिलना चाहिए उसे ना मिले। यहाँ उसे अध्यापकों को अधिक जिम्मेदारी का वहन करना पड़ता है। इस भूमिका को अधिक सार्थक बनाने के लिए सरकार को चाहिए कि वह कम से कम ऐसा वेतनमान तो इन्हें दे जिससे यह पारिवारिक जीवन अच्छे ढंग से जी सकें। अर्थ के अभाव में असंतोष की अराजकता से बचा जा सके। और पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता और चुनौतियाँ इनका पूरा ध्यान केवल धर्म जैसे कार्य में लगे। समाज में जब इनका जीवन स्तर बढ़ेगा तभी ये समाज की सच्ची सेवा एकाग्रता से कर पायेंगे। कहा भी गया है शिक्षक के व्यावसायिक कार्य से सम्बन्धित जिस परिणाम की आशा है वह परिणाम प्राप्त करने का प्रयत्न करना शिक्षक का आधारभूत काम है। जाति, धर्म, लिंग अथवा अन्य किसी भेदभाव के बिना बालक के व्यक्तित्व को निखारना शिक्षक का दायित्व है। शिक्षक समुदाय और समाज का एक सदस्य है। इसलिए समाज के मानकों के अनुरूप बालक के व्यक्तित्व का निर्माण करना शिक्षक का काम है तथा शिक्षक का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण और आधारभूत काम बालक के नैतिक एवं चारित्रिक विकास पर ध्यान देना है। शिक्षक अपने विषय का ज्ञाता होता है। उसे उस ज्ञान को विद्यार्थियों तक पहुँचाने की कला में दक्ष होना चाहिए। उसकी योग्यता, कार्य करने की क्षमता, शिक्षण कला, विधियों की जानकारी, कौशलों की जानकारी तथा कम से कम प्रयत्न में सरलता से ज्ञान को सम्प्रेषित करना यह सब शिक्षक की विशेषज्ञ भूमिका मानी जानी चाहिए। आज केवल विषय ज्ञान कला शिक्षक, संगीत शिक्षक, नृत्य शिक्षक, स्वास्थ्य शिक्षक आदि। इन सबके लिए भी विशेषता जरुरी है। कार्य निर्धारण क्षेत्र के साथ शिक्षक को अपने विषय के लक्ष्यों को प्राप्त करना होता है। अपने विद्यार्थियों और साथियों की दृष्टि को ध्यान में रखना होता है। कक्षा में सामाजिक तथा समरूप वातावरण का निर्माण करना होता है तथा समाज की मांग के अनुरूप उस विषय में किन संदर्भों पर अधिक बल दिया जाए इसको भी उसे ध्यान रखना होता है। एक वाक्य में कहें तो प्रत्येक अध्यापक अपने विषय का विशेषज्ञ हो। विषय को बालक तक सम्प्रेषित करने के लिए जिन योग्यताओं की आवश्यकता है वे सब शिक्षक की विशेषज्ञ के रूप में भूमिकाएं मानी जाती हैं। शिक्षण व्यवसाय अन्य व्यवसायों की तरह न होकर जिम्मेदारी की भूमिका वाला व्यवसाय है। जहाँ तक शिक्षक का प्रश्न है, वह अपने विषय को पढ़ाने वाला एक वैसा ही सदस्य है जैसे दूसरे व्यवसायों के लोग जिम्मेदार होते हैं। कैलिफोर्निया शिक्षक संघ के अनुसार आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक का प्रमुख व्यावसायिक उत्तरदायित्व अपने विद्यार्थियों की शैक्षिक निष्पत्ति को या बालकों के सर्वांगीण विकास को प्रभावित करने वाली भूमिका में निहित है। इसलिए आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक विषय शिक्षण करे, लेकिन विद्यार्थियों को पर्याप्त स्वतंत्रता दे। अनुशासन पालन करवाना उसकी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है जो उसके व्यवसाय के साथ जुड़ी है, किन्तु इसके साथ व्यावसायिक संहिता यह भी कहती है कि शिक्षक को स्वयं भी अनुशासित होना चाहिए। निर्धारित समय में शिक्षण करना, विद्यालय में सौंपे गये कार्यों को पूरा करना, विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास के लिए सहगामी क्रियाओं के

आयोजन की दक्षता तथा बालक के संकलित अभिलेख पत्रों का रख–रखाव अध्यापक की व्यावसायिक भूमिका के अन्तर्गत आते हैं। यहां तक कि समाज में धर्म के आधार पर यदि कोई वैमनस्य पैदा होता है अथवा अन्धविश्वास के कारण समाज में गलत परम्पराएं विकसित हो जाएं तो उनको नियंत्रित एवं संषोधित करने में भी शिक्षक की व्यावसायिक भूमिका की आवश्यकता होगी। शिक्षक विभिन्न स्रोतों से नवीनतम एवं सही–सही सूचनाएं एकत्रित करता है और उन सूचनाओं से विद्यार्थी को अवगत कराता है। विद्यार्थियों के बीच होने वाले झगड़ों, विवादों को सुलझाता है। निर्णय करने में वह एक न्यायाधीश की भूमिका का निर्वाह करता है। इसी प्रकार मूल्यांकन करते समय भी वह न्यायाधीश की भूमिका का निर्वाह करता है। शिक्षक विद्यार्थियों के प्रतिनिधि के रूप में भूमिका का निर्वाह करता है। जिस प्रकार समाज का नेता समाज के सदस्यों की भावनाओं को समझता है, उनकी इज्जत करता है, उसी प्रकार शिक्षक विद्यार्थियों का मार्गदर्शक है। वह उनकी भावनाओं को समझता है ओर उनके योग्य नीतियों का निर्धारण करता है। विद्यार्थियों के मध्य उत्पन्न हुए असंतोष अथवा झगड़ों के लिए वह दो पक्षों की बात को संतुलित करते हुए निर्णायक की भूमिका निभाता है। वह बालकों के लिए एक अभिभावक की भूमिका निभाता है, क्योंकि अभिभावकों ने उतने समय के लिए अपने बालक को अध्यापक के हाथों में सौप दिया होता है। अध्यापक तीन प्रकार के समूह का नेता हो सकता है– (1) विद्यार्थियों का, (2) शिक्षक साथियों का (3) समाज/समुदाय का नेतृत्व करने वाला। अनके विद्यार्थियों में स्वयं की पहचान स्थापित करने की इच्छा रहती है। शिक्षक ऐसे विद्यार्थियों की पहचान करता है। यदि गलत संदर्भ में उसका अहम् विकसित हुआ हो तो उसे ठीक करना और मार्गदर्शन देना शिक्षक का काम है। जो अच्छे विद्यार्थी हैं, उनकी उपलब्धि की प्रशंसा करना और अच्छे काम करने को प्रेरित करना आदि अप्रत्यक्ष रूप से बालक के अहम् की संतुष्टि हैं। शिक्षक एक अच्छा मित्र, सहायक एवं विश्वास करने योग्य होता है। अनेक बार देखा गया है कि विद्यार्थी अपने घर के सदस्यों से अपनी कोई बात नहीं कह पाता और शिक्षक पर वह विश्वास करता है। अतः शिक्षक को उसके विश्वास की रक्षा करनी चाहिए। सामाजिक न्यायकर्ता की भूमिका निभानी पड़ती है। आधुनिक शिक्षा पद्धति में शिक्षक की एक भूमिका मूल्यों के विकास की भी है। पूरा देश, बल्कि विश्व मूल्य ह्रास से चिन्तित है। इस संदर्भ में शिक्षक की भूमिका अद्वितीय है। आज सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक, पारम्परिक, समाजवादी, प्रजातन्त्रात्मक, वैज्ञानिक और आधुनिक मूल्यों के संदर्भ में सोचना तथा शिक्षा द्वारा उन मूल्यों के विकास पर जारे देना शिक्षक की भूमिका से जुड़ गया है। पर्याप्त नहीं है। विद्यार्थियों को समझना, विषय की प्रकृति को समझना, समाज की वर्तमान और भावी आवश्यकताओं को समझना और उसके अनुरूप बालक में अनुकूल शैक्षिक वातावरण व प्रौद्योगिकी एवं यांत्रिकी उपकरणों के प्रयोग द्वारा ज्ञान का विकास करना विशेषज्ञ की भूमिका कहलायेगी। यद्यपि विशेषज्ञ एवं व्यावसायिक भूमिका को पृथक नहीं किया जा सकता, फिर भी अपने उद्देश्य (बालक) को कैसे अच्छे से अच्छा ज्ञान दिया जा सकता है, यह सब विशेषज्ञ भूमिका के अन्तर्गत आता है। शिक्षक भी कई प्रकार के होते हैं, जैसे– विषय शिक्षक, कि, भूखे भजन न हो गोपाला। आज भी हम अध्यापक को वही प्राचीन ब्राह्मण रूप में देखते हैं, जो गुरूकुल में शिक्षा दे रहा है, जिसके पास शिक्षा देने के अतिरिक्त कुछ नहीं है। जब समाज में परिवर्तन हुआ है तो ऐसे में शिक्षक को भी सुख–सुविधाएं प्रदान करनी चाहिए, जिससे इस सेवा कार्य में और लोग आएं। यही कारण है कि आज शिक्षक की नौकरी करने के लिए लोगों का अभाव होता चला जा रहा है। पढ़ा लिखा समाज अन्य पदों पर कार्य करना चाहता है। वह सोचता है इस कार्य से करने में बचता ही क्या है ? समाज में शिक्षकों की न्यूनता का भाव यह दर्शाता है कि उनके कंधे पर जिम्मेदारियों का बोझ अधिक है, वे अपने कर्तव्य से विचलित न हों, उनकी एकाग्रता न टूटे इसलिए समाज को भी एक बार फिर से उन पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

जब एक गुरु अपने विद्यार्थी को ज्ञान देता है तो इसे ही शिक्षण कहा जाता है। प्राचीन काल से ही ऋषि मुनि शिक्षण का कार्य कर रहे हैं। *अथर्ववेद* में 'अन्तेवासी' शब्द के रहस्य को व्याख्यायित करते हुए कहा गया है– ''बालक को शिक्षित करने के लिए स्वीकार करते हुए गुरु इस प्रकार सुरक्षित तथा संभाल कर रखता है, जैसे माँ उसे अपने गर्भ में रखती है। शिक्षक और विद्यार्थी के सम्बन्ध अत्यन्त घनिष्ठ और मधुर थे। विद्यार्थी शिक्षक के प्रति सम्मानपूर्वक दृष्टिकोण रखते थे तथा शिक्षक भी अपने कर्तव्यों के प्रति पूर्णतः समर्पित थे। दोनों एक–दूसरे के

कल्याण के लिये परमात्मा से प्रार्थना करते थे। *कठोपनिषद्* में कहा गया है– **ऊँ सह नाववतु। सह नौ भुनक्तु। सह वीर्यं करवावहै। तेजस्वि नावधीतमस्तु। मा विद्विषावहै।** *तैत्तिरीयोपनिषद्* में भी कहा गया है– **तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु। अवतु माम्। अवतु वक्तारम्।।** अर्थात् तुम मेरी रक्षा करो तथा ब्रह्म का निरूपण करने वाले आचार्य की भी रक्षा करो। मेरी रक्षा करो और वक्ता की रक्षा करो। उस काल में विद्या को संहिता के रूप में प्रस्तुत किया जाता था। इसका प्रमाण *तैत्तिरीयोपनिषद्* के इस मन्त्र से मिलता है– **अथाधिविद्यम्। आचार्यःपूर्वरूपम्। अन्तेवास्युत्तररूपम्।विद्या संधिः। प्रवचनं संधानम्। इत्यधिविद्यम्।** अर्थात् अधिविद्य दर्शन कहा जाता है– इसकी संहिता का प्रथम वर्ण आचार्य है। अन्तिम वर्ण शिष्य है, विद्या सन्धि है और प्रवचन सन्धान है। यह विद्या सम्बन्धी दर्शन कहा गया है। शिक्षक तो विद्यार्थी के लिए पिता, भाई और मित्र के समान होता है। अतः मित्र जैसे व्यवहार से उसे जीतना, भाई जैसे व्यवहार से उसे प्यार करना तथा पिता जैसे व्यवहार से उसे विकिसत होने देना और अध्यापकीय रूप से उसे शिक्षा एवं दिशा देना शिक्षक का ध्येय होना चाहिए। एक शिक्षक को चाहिए कि वो बेहतर ढंग से सोचने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करे, उनकी त्रुटि दूर करे, विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करे, उनकी समझ को जाँचे।

शिक्षकों का अहम ध्येय युवा मस्तिष्क को तेजस्वी बनाना है। तेजस्वी युवा धरती पर, धरती के नीचे और ऊपर आसमान में सबसे सशक्त संसाधन हैं। शिक्षक की भूमिका उस सीढ़ी जैसी है, जिसके जरिये लोग जीवन की ऊंचाइयों को छूते हैं। हमारे समाज में और एक बच्चे के जीवन में, एक शिक्षक का स्थान माता–पिता के बाद, लेकिन ईश्वर से पहले आता है। माता–पिता, गुरु और फिर ईश्वर। ऐसी महत्ता, दुनिया में किसी और पेशे की नहीं है कि वह समाज के लिए शिक्षक से बढ़कर महत्वपूर्ण हो। शिक्षक, खासकर **विद्यालयी** शिक्षक के सामने व्यक्ति के जीवन को संवारने की भारी जिम्मेदारी होती है। बचपन ही वह आधारशिला है जिस पर जीवन की इमारत खड़ी होती है। जैसा बीज बचपन में बोया जाता है वैसा ही जीवन के वृक्ष में फल लगता है। इसलिए बचपन में दी जाने वाली शिक्षा **महाविद्यालय** या **विश्वविद्यालय** में दी जाने वाली शिक्षा से अधिक महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक का ध्येय बच्चों का चरित्र निर्माण करना तथा ऐसे मूल्यों को रोपना होना चाहिए जिससे कि उनके सीखने की क्षमता में वृद्धि हो। वे उनमें वह आत्मविश्वास पैदा करें कि छात्र कल्पनाशील और सृजनशील बन सके। इस रूप में छात्रों विकास ही उन्हें भविष्य की चुनौतियों का सामना करते हुए प्रतिस्पर्द्धा में उतारेगा। सामान्य प्रक्रिया में शिक्षक कुछेक सर्वोत्तम परिणाम देने वाले छात्रों की ओर आकर्षित होते हैं तथा और अधिक सफलता प्राप्त करने के लिए उन्हें प्रोत्साहित करते रहते हैं। इसके विपरीत एक शिक्षक की अहम भूमिका यह है कि वह उन विद्यार्थियों की ओर ध्यान केन्द्रित करे जो पढ़ने में कमजोर हैं तथा उनमें बेहतर समझदारी एवं सीखने की प्रवृति विकसित करने का प्रयास करे। ऐसा शिक्षक ही वास्तविक गुरु होता है। महान शिक्षक एवं भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन शिक्षकों को सलाह देते थे कि–'हमें सतत् बौद्धिक निष्ठा एवं सार्वभौम करुणा की खोज में रहना चाहिए। ये दोनों गुण सच्चे शिक्षक की पहचान हैं।'

एक शिक्षक में अपने पेशे के प्रति प्रतिबद्धता होनी चाहिए। शिक्षक को जीवन भर अध्ययन करते रहना चाहिए। उसे शिक्षण और बच्चों से प्रेम होना चाहिए। उसे न सिर्फ विषय की सैद्धान्तिक बातें पढ़नी चाहिए बल्कि छात्रों में हमारी महान सभ्यता की विरासत और सामाजिक मूल्यों की जमीन भी तैयार करनी चाहिए। आधुनिक प्रौद्योगिकी की सहायता से शिक्षक छात्रों का ऐसा विकास करे कि वे बिना किसी शिक्षक की सहायता लिए स्वयं सीखने में सक्षम हो सकें। ज्ञान प्राप्ति के लिए चिंतन एवं कल्पना की स्वतंत्रता आवश्यक है और इसके लिए शिक्षक को उपयुक्त माहौल का निर्माण करना चाहिए। शिक्षक रोल माडल होता है। वह न सिर्फ हमें ज्ञान देता है बल्कि हमारे जीवन को संवारते समय महान सपने और उद्देश्य प्रदान करता है। दूसरी बात यह कि शिक्षा एवं ज्ञानार्जन की पूरी प्रक्रिया का परिणाम यह होना चाहिए कि व्यक्ति में पेशेवर क्षमता का विकास हो और उसमें इस आत्मविश्वास और इच्छाशक्ति का उदय हो कि दृढ़तापूर्वक सारी बाधाओं को पार कर एक रूप रेखा का विकास कर सके और

इस कार्य में शिक्षक सहायता करता है। एक शिक्षक का जीवन कई दीपों को प्रज्ज्वलित करता है। आशावादी और मूल्याधारित शिक्षण में विश्वास करने वाले प्राथमिक, माध्यमिक और कॉलेज शिक्षा के शिक्षक शिक्षार्थियों को कई दशक आगे के लिए तैयार कर देते हैं। इस प्रकार शिक्षक विद्यार्थियों को भविष्य के लिए तैयार करता है। शिक्षण का उद्देश्य छात्रों में राष्ट्र निर्माण की क्षमताएं पैदा करना है। ये क्षमताएं शिक्षण संस्थाओं के ध्येय से प्राप्त होती हैं तथा शिक्षकों के अनुभव से सुदृढ़ होती हैं ताकि शिक्षण संस्थाओं से निकलने के बाद छात्रों में नेतृत्वकारी विशिष्टता आ जाए। अगर समाज में योग्य, चरित्रवान एवं निष्ठावान छात्र हो जाएं तो वर्तमान समाज को प्रत्येक वर्ष एक सुखद अहसास दिया जा सकता है और यह कार्य शिक्षक, जो गुरु हैं, प्रेरणास्रोत हैं, वही कर सकते हैं। अंततः शिक्षा का उद्देश्य है सत्य की खोज। इस खोज का केन्द्र अध्यापक होता है जो अपने विद्यार्थियों को शिक्षा के माध्यम से जीवन में व्यवहार में सच्चाई की शिक्षा देता है। छात्रों को जो भी कठिनाई होती है ,जो भी जिज्ञासा होती है, जो वे जानना चाहते हैं, उन सब के लिए वे अध्यापक पर ही निर्भर करते हैं। उनके लिए उनका अध्यापक एक तरह से ज्ञान का भंडार (एन्साइक्लोपीडिया) है जिसके पास सभी प्रश्नों के उत्तर हैं। यदि शिक्षक के मार्गदर्शन में प्रत्येक व्यक्ति शिक्षा को उसके वास्तविक अर्थ में ग्रहण कर मानवीय गतिविधियों के प्रत्येक क्षेत्र में उसका प्रसार करता है तो मौजूदा इक्कीसवीं सदी में दुनिया काफी सुन्दर हो जाएगी।